डॉ. रश्मि बी. वी की कविताएँ

महात्मा बुद्धजी

मनुष्य जीवन का सच
कुछ आर्थिक परिस्थितियों का है
जिना भी है चाहत के साथ
चाहत भी है कुछ पाने के साथ

पाना भी है कुछ खोने के साथ
और खो जाए मिलने के बाद
फिर इस जीवन का क्या अर्थ
मेरे जीवन में मेरे जीने के साथ

महात्मा बुद्ध ने राज पाठ छोड़कर
साधना करके परमात्मा प्राप्ति करली
असंख्य लोग बौद्ध भिक्षुक बनकर
भगवान बुद्ध के सानिध्य में रहने लगे

उनके पीछे चलने वाले अनुयायियों का
एक संघ स्थापित हो गया
चहुं और नाथ गूंजने लगे बुद्ध शरणम
गच्छामि धर्म शरणम गच्छामि संघ शरणम गच्छामि

उनका यश देखकर दुर्जन लोग जलने लगे
और उनके खिलाफ वैश्य से दुष्कर्म का
आरोप लगाकर, खूब बदनाम किया
पर आज भी उनकी जय जय कर हो रही है

वर्तमान में भी साधु संतों पर यही
सिलसिला जारी है सत्य की
जीत होगी बुद्धम शरणम गच्छामि
धर्मं शरणम गच्छामि संघम शरणम गच्छामि ।

-----xxxx-----

शिक्षा की महिमा

शिक्षा देती है हमें ज्ञान
यहां हमें बनती बुद्धिमान
करती मानव को सुख प्रदान
जीवन को देती है सवाँर

शिक्षा से मिलते गुण अनेक
शिक्षा से बढ़ जाता विवेक
देती शिक्षा है सीख नेक
शिक्षा से उपजे साधु विचार

शिक्षा से होता है विकास
रहता ना अंधेरा आसपास

हो जाता विद्या का प्रकाश
होता समाज का सुधार

पढ़ लिख कर करते सुख प्राप्त
हो जाता मन मे हर्ष व्याप्त
अज्ञान संख्या होता समाज
आता चरित्र में सदाचार
शिक्षा की महिमा है अपार ।

-----xxxx-----

मेरी प्यारे पिता

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमां है पिता
जन्म दिया है अगर मां ने
जानेगा जिसे जग वह पहचान है पिता

कभी कंधे पर बिठाकर मेल दिखाता हे पिता
कभी बन के घोड़ा घूमता है पिता
मां अगर पैरोंपे चला चलना सिखाती है
तो पैरों पर खड़ा होना सिखाता है पिता

कभी रोटी तो कभी पानी है पिता
कभी बुढ़ापा तो कभी जवानी है पिता
मां अगर है मा मासूम सी लोरी तो
कभी ना भूल पाऊंगी वह कहानी है पिता

कभी हंसी तो कभी अनुशासन है पिता
कभी मौन तो कभी भाषण है पिता
मां अगर घर में रसोई है तो
चलता है जिससे घर वो शान है पिता

कभी ख्वाब तो पूरी करने की जिम्मेदारी है पिता
कभी आंसुओं में छिपी लाचारी है पिता
मां अगर बेच सकती है जरूरत पर गहन
तो जो अपने को भेज देते वह प्यारी है पिता

कभी हंसी और खुशी का मेला है पिता
कभी कितना तन्हा और अकेला है पिता
मां तो कह देती है अपने दिल की बात
सब कुछ समेत के आसमान सा फैला है पिता ।

-----xxxx-----

प्रेम का रोग

जो वीरहा के राग जागे मन मे
रहे सुधि नहीं तन का नहीं मन्न का
दुविधा के सागर में फिर बने वलय
और बने कई-कई गुच्छा सवाल की

प्रेम का रंग है अति चित्र विचित्र
लगे जान के जोर से नहीं संभाल सके

जो बाल का जोर लागे बने टूट का भय
मन्न द्वंद बने व्यर्थ जंजाल की

प्रेम भाव निष्प्राण नहीं इसमें रस सांग बस
जब किया स्नेह जागे सुधि न रहे तन की
मन्न अनुराग लगे, जग लगे प्रीति मई
रसधार बाहें बन्द तोड़ दिया हृदय के तालन की

प्रीति डोर आई कोमल है सूक्ष्म आती
भीतर पड़े जो किंचित भी प्रहार हुआ
क्षणिक आनंद को क्षण में विस्मय
जो टूट पड़ी, तीस मचे हीया किया चालान की

प्रति की डोर सवा मन का भार लिये
कभी उठावा अधिक कभी दाव अधिक के
मैन प्रेम में डूबा, जो करो इसका, जय जय
जमकर स्वाद चको, प्रेम के सालन की

-----xxxx-----

डॉ रश्मि बी वी

प्रवक्ता, विश्वविद्यालय कॉलेज मेंगलुरु, G-Mail: rashubv2012@gmail.com